R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 25वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

शोध पत्र

www.shaharsamta.com

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

वर्ष 25 | अंक 5 | रविवार, इलाहाबाद, 22 जून 2025 | पृष्ठ 6 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

संपादकीय

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

रचना का है सफर सुहाना ,
रचना से सब होता है ।
जीवन चलता, जीवन होता,
रचना जीवन का श्रोता है ।

तो बात हो रही है महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक की । नारी मन की सुंदर बातों का गुच्छा, हर महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक की रचनाओं में झलकता है। अपनी बातों को समरसता से व्यक्त करने वाली इन रचनाओं का

अवलोकन करिए और देखिए, बताइए की रचना का संसार कैसा है -

पहली बानगी

नमो कार मंत्र मेरा
जीवन बना दो,
चरणों के हृदय से
मेरा हृदय सजा दो।

दूसरी बानगी

अगर हम न होते तो तुम भी न होते
न तो प्यार होता न ही गम भी होते
चाँद सितारों के हम संग न होते
अँधेरों को मिटाते चिलमन न होते

तीसरी बानगी

मेरी मां के आंचल की छांव निराली है
इसने ही तो मेरी हर ख्वाइश संभाली है
डांटती है जब जब बड़ी जोर से गुस्से में मुझे
फिर खुद उदास बैठती मां मेरी भोली भाली है

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक की कविताओं को देखिए समझिए और बताइए कि विशेषांक कैसा लगा, प्रतिक्रिया जरूर दीजिए।

अंत में

रचनाओं का देश यहाँ है
दुख सुख, सब पीड़ाएं ।
गौर से देखो इन रचनाओं मे
जीव जगत की क्रीड़ाएं ।

उमेश श्रीवास्तव

जबलपुर इकाई

रघुवर

रामी रामा मैं कहूँ, जीवन के दिन चार।
राघव की महिमा करे, भवसे सबको पार।।
पल-पल बीता जा रहा ,रामा रामा बोल।
दर्शन रघुवर का मिले, अंतस सुख अनमोल।।

रघुवर का वंदन करें, अर्पित सुंदर भाव।
नैना मोहित कर रहे, अंतस रहें लगाव।।
पावन मंगल कामना, ईश्वर वंदन खास।
गुंजन रघुवर नाम से, नैना दर्शन प्यास।।

वंदन प्रभु का सब करें, सार्थक जीवन नाम।
चिंतन कीर्तन साथ हो, उत्तम चेतन धाम।।
करती हूँ आराधना, आ जाना प्रभु द्वार।
गहना उर की भक्ति है, ये जीवन का सार।।

मन मंदिर रघुवर बसे, पावन मोहक मीत।
मौन मगन मुखरित रहे, मधुवन रसमय प्रीत।।
मुदित हृदय नर्तन करे, मधुकर गुंजन गीत।
सहज सरल मंजिल मिले ,होगी तेरी जीत।।

सेवा श्रद्धा से भरी ,
थामो माला आज।
आओ गाए आरती, सुंदर बने समाज।।
साथी थामे हाथ है, गाँवों घूमें संग।
बाँधे डोरी प्रेम की, नाचे गाए रंग।।

राघव थामो हाथ को , हर ले अब हिय ताप।
गाथा तेरी गा रहे, हृदय बसो प्रभु आप।।
मीठी वाणी से सदा, होगी तेरी जीत।
चरण कमल हरि ध्यान से, बहे नयन जल प्रीत।।

उमा मिश्रा प्रीति

जय -जय श्री हनुमान

संकट मोचक अति बलशाली,
शुभ फल देते जान ।
मातु अंजनी के सुत प्यारे,
जय - जय श्री हनुमान ।।

पवन तनय बल बुद्धि विधाता,
महिमा अपरम्पार ।
भक्त शिरोमणि हैं विज्ञानी,
मानें कभी न हार ।।

चारों युग में होती पूजा, सेवा पथ साकार ।
दिव्य भक्त हैं हनुमत देवा, भव से करते पार ।।

दुख भंजक हैं सुख के दाता, रुद्र लिए अवतार ।
विद्या वारिधि मंगलकारी, पूजें सब नर -नार ।।

डॉ कुमकुम शुक्ला

नमो कार मंत्र

नमो कार मंत्र मेरा
जीवन बना दो,
चरणों के हृदय से मेरा हृदय सजा दो।
मैं हूँ फूल छोटा सा तुम्हारा चमन का,
कहीं हर ना ले जाए झोंका पवन का।
चरणों की छांव में मुझको बिठा लो,
अरिहंत निज गाम मुझको बुला लो।
णमोकार मंत्र मेरा जीवन बना दो!!

अनीता दुबे जबलपुर

सर्व कामना पूर्ण करेंगे अवध बिहारी

सर्व कामना पूर्ण, करेंगे अवध बिहारी।
रसना निशदिन बोल, राम की जय बलिहारी।।
पिता वचन का मान, निभाए बन अधिकारी।
पुरुषोत्तम श्री राम, कामना जानें सारी।।
गुरु वशिष्ठ का शिक्षा ज्ञान, संसारी जीवन उत्थान।
माँ शारद करवाती भान, छोड़ अवध वन में प्रस्थान।

आए वन में राम, देव के काज बनाने।।
तार अहिल्या नार, शाप से मुक्त कराने।
करने गंगा पार, चरण अपने धुलवाके।
केवट का उद्धार, किए समरसता लाके।।
आए हैं ऋषियों के द्वार,बलकल वस्त्र मिले उपहार।
दानव जन से था जग त्रस्त, ऋषि-मुनियों से पाए अस्त्र।

असुर करें उत्पात , मुक्ति उनको दिलवाने।।
माँगे थे वरदान, भरत को राज दिलाने।
विधि ने रचे विधान, धर्म की सीख सिखाने।
रावन का अभिमान, चूर कर अहं मिटाने।।
मित्र मिले सुग्रीव समान, अंगद जामवंत हनुमान।
हुई मित्रता मन विश्वास, पूर्ण कामना जगन्निवास ।।

अनुराधा गर्ग दीप्ति

जय हनुमान

तुम शुभ मंगल को जन्मे हो
करते हो सबके मंगल काम
बिगड़े कारज सँवर जाते हैं
यदि ले लो पवन सुत नाम।।

विद्या, बल ,बुद्धि में अग्रणी
भक्तिभाव में सर्वश्रेष्ठ कहाते
पवन वेग से जब उड़ते तो
डर जाते आकाश, भू धाम।।

राम सिया निज हृदय संजोये
खुद राम के चरणों में विराजे
कलयुग में तुम बजरंगी पुजते
चरणों में करते भक्त प्रणाम।।

हनुमान बिना राम कथा अधूरी
सुंदरकांड हनुमत महिमा पूरी
राम- लखन को कांधे बिठाया
ऐसे भक्त हनुमान को प्रणाम ।।

सीता को माँ कह के पुकारा
राम-संदेश सीता को बताया
दिखा मुद्रिका किया प्रणाम
पवनसुत करते तुम्हें प्रणाम ।।

अपने भक्तों की रक्षा करते
हनुमान बिना राम न पुजते
रामकथा हनुमत बिन अपूर्ण
करते हम हनुमान को प्रणाम ।।

जो सुंदरकांड का पाठ करते
उसके बिगड़े कारज सँवरते
बजरंगी सब बाधा दूर हटाते
विघ्नहर्ता हनुमान को प्रणाम।।

आशा जाकड़

राम नाम आधार

राम नाम की महिमा न्यारी,
सकल जगत राम नाम ध्याये

राम नाम भव से पार कराये
प्राण तजे परमात्मा मे समाये.
समभाव जगे, कर्मो से प्रेरित हो,
राजारंक,अपने पराए भेद मिटाए

अर्थ गूढ रामनाम समझ ना पाए
मूलमन्त्र बीज नाम मे जो समाए,
मोह तज पर्मार्थ मार्ग पथ बढाएं
भव से मानुष जीवन पार लगाएं.

मर्यादित आचरण पालन सिखाएं
भक्ति में शक्ति बन समाए समाएं.
अंत दुखोंका करने तारक कहलाएं.
अहंकार विनाश कर, निर्बल पार लगाएं.
राहु के प्रबल योग से राम मूल मंत्र उबारे.

ऊँ राँ राहवे नमःसशक्त भाव जगाएं.
श्रीराम, रामायनमःरामचन्द्राय कहलाएं.
राम नाम को जाने, आचरण में उतारे.
तभी राम मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम कहाएं.

आरती शर्मा

लाल गुलाब

लाल गुलाब पत्ती में बँधा हुआ!
खड़ा हुआ है डाली पर!

कुछ दिन पहले कली बना था!
चुपके से भँवरे ने छुआ था!

मधुमति सुगंध रूप सौंदर्य,
देखकर हर्षित धरती थी!
चुप कर मुझसे बातें करती थी!

कुछ कहती कुछ समझाती थी,
गर्व ना कर रंग रूप पर!

मन से अनुनय विनय कर,
प्रभु के चरणों में जाओगी!
जीवन सफल कर पाओगी!

प्रभु का आशीष तुम पाओगी!

प्रेमी के हाथों में प्रणय निवेदन करोगी!

वरमाला में गठबंधन में, सप्तपदी की शोभा बन,
नवजीवन पदार्पण वेणी गजरा!

सपनों के सुखद सेज सजाकर,
संस्कारों की रीत बनोगी!

गुलाब जल और इत्र बनकर,
सारे जग में महकोगी!

पकवानों की शान बनोगी,
फिर रसना का स्वाद बनोगी!

फूलोगी फलोगी मेरी प्यारी,
कली से तुम फूल बनोगी!

जीवन कितना अनमोल है ,यह
सीखोगी और समझ सकोगी!

डॉ साधना शुक्ला

जिंदगी जीने की कला है

सच, जिंदगी जीने की बेशक कला है
सादगी और अनुशासन ही जीने की कला है
जीवन बड़ा अमूल्य है
इसका सही प्रबंधन
हमारे जीवन को सुखमय बना सकता है
जीवन में संसार का अनुपम सौंदर्य है भरा हुआ
इसका आनंद तभी ले सकते हैं जब
जीवन जीने की कला को अच्छी तरह समझ लें
अध्यात्म हमें जीवन जीने की कला सिखाता है
यह दिव्य विद्या प्राणी को हर दुःख,
कष्ट और चिंता से निजात दिलाकर
आनंद से सराबोर करता है
अतीत की चिंता को हटा दें
रिश्तों को अहमियत दें
दूसरों की भावनाओं का सम्मान करें
सकारात्मक सोच अपनाना चाहिए,
खुश रहने के लिए जरूरी है
कि हम वर्तमान में जीना सीखें
और हर पल को खुशियों के साथ बिताएं
जिंदगी में खुश रहना कोई जादू नहीं है
यह एक सतत प्रयास है
हमें अपने जीवन योग को भी
नियमित रूप से शामिल कर लेना चाहिए
इसे हम एक यात्रा भी कह सकते हैं
इसे हम अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ
अपनाएंगे, उतनी ही खुशी प्राप्त होगी
इसलिए हमेशा खुश रहना सीखें
अपने जीवन को संतुलित और स्वस्थ बनाएं

डॉ मीना कुमारी परिहार

शिलांग इकाई

हाइकु

होली का रंग
छाया इन्द्रधनुष
मस्त टोलियाँ

धरती सजी
उड़े गुलाल, टेसू
फागुन आया

होली की टोली
कर रही ठिठोली
हँसे केसर

फाइकु
रंग बरसे चारो ओर
गुलाल लाल-पीले
तुम्हारे लिये

मिल रहे सब गले
कर रही प्रतीक्षा
तुम्हारे लिये

लिये फूलों की थाल
बनाये विविध व्यंजन
तुम्हारे लिये

अनीता पंडा 'अन्वी'

लोक आस्था का मान संस्कृति का गौरवगान

मुख्य तीर्थ स्थलों पर पर्यटकों का आगमन

जनवरी से दिसम्बर तक

	अयोध्या	काशी	मथुरा	प्रयागराज
2023	5.76 करोड़	10.18 करोड़	7.79 करोड़	5.06 करोड़
2024	16.44 करोड़	11 करोड़	9 करोड़	5.12 करोड़

रु 4560 करोड़ की लागत से धार्मिक स्थलों को जोड़ने वाले 272 मार्गों का विकास

प्रसाद योजना : इस योजना के तहत उत्तर प्रदेश में कई महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों को विकसित किया जा रहा है, जैसे कि वाराणसी में मार्कण्डेय महादेव मंदिर का एकीकृत विकास, सारंगनाथ तालाब का पुनरुद्धार, बुद्ध थीम पार्क, सारनाथ आदि, मथुरा में कृष्ण सरोवर,बाड, चंद्र सरोवर, चौमुहा, आदि, गोवर्धन में गोवर्धन बस स्टेशन पर विकासऔर अन्य। इन तीर्थ स्थलों में बुनियादी ढांचे का विकास किया जा रहा है।

स्वदेश दर्शन योजना : उत्तर प्रदेश में केन्द्र की स्वदेश दर्शन योजना के तहत कई परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है, जिनमें मुख्य रुप से बौद्ध सर्किट, आध्यात्मिक सर्किट, रामायण सर्किट, हेरिटेज सर्किट शामिल हैं।

धार्मिक स्थलों का विकास कार्य

- लखनऊ, प्रयागराज एवं कपिलवस्तु में हेलीपोर्ट सेवा की सुविधा
- अयोध्या में विश्व स्तरीय मंदिर संग्रहालय की स्थापना प्रक्रिया गतिमान
- अयोध्या शोध संस्थान का उच्चीकरण, अंतर्राष्ट्रीय रामायण एवं वैदिक शोध संस्थान की स्थापना
- कुशीनगर में बुद्धा थीम पार्क परियोजना
- नैमिषारण्य तपोस्थली (सीतापुर) पर वेद विज्ञान अध्ययन केंद्र की स्थापना
- गोरखपुर में परमहंस योगानन्द जी जन्मस्थली का पुनरोद्धाटन
- श्रृंगवेरपुर में निषादराज गुह्य पर्यटन स्थल का विकास
- चित्रकूट, बरसाना एवं अष्टभुजा-कालीखोह में पीपीपी मॉडल पर रोप-वे परियोजना प्रारंभ

66.30 करोड़ श्रद्धालुओं का आगमन

3 विश्व रिकॉर्ड दर्ज

₹3 लाख करोड़+ अर्थव्यवस्था में योगदान

एकता, समरसता का महापर्व

महाकुम्भ प्रयागराज 2025

प्रमुख परियोजनाएं एवं आयोजन

- श्रीकाशी विश्वनाथ धाम कॉरिडोर का निर्माण
- अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर का निर्माण
- मां अन्नपूर्णा की प्रतिमा का 100 वर्षों बाद पुनः प्रतिष्ठापन
- विंध्य धाम कॉरिडोर मीरजापुर का विकास
- नाथ कॉरिडोर बरेली का विकास कार्य प्रगति पर
- अयोध्या दीपोत्सव में गिनीज रिकॉर्ड के साथ 25,12,585 दीप प्रज्ज्वलित
- ब्रज रंगोत्सव और काशी की देव-दीपावली
- नैमिष तीर्थ एवं शुक्र तीर्थ का पुनरुद्धार

तीर्थ विकास परिषदों का गठन

- श्री अयोध्या जी तीर्थ विकास परिषद
- श्री देवीपाटन तीर्थ विकास परिषद
- उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद
- श्री विंध्य धाम तीर्थ विकास परिषद
- श्री चित्रकूट धाम तीर्थ विकास परिषद
- नैमिषारण्य धाम तीर्थ विकास परिषद
- उत्तर प्रदेश श्री शुक्र तीर्थ विकास परिषद

मेले का प्रांतीयकरण

- 'मकर संक्रान्ति मेला' एवं 'बसंत पंचमी मेला', अयोध्या
- 'कार्तिक पूर्णिमा गंगा स्नान मेला अनूपशहर', बुलंदशहर
- 'लक्खी मेला श्री दाऊजी महाराज', हाथरस

पर्यटन सुविधाओं का विस्तार-डबल इंजन सरकार

रंग

रंगों का त्यौहार है, खेलो अबीर गुलाल,
हरा, नारंगी, बैंगनी, नीला, पीला लाल।
रंगों की दुनिया कितनी है अनमोल,
बिना रंग जीवन हो जाये बेमोल।।
प्रकृति ने अनूठे रंग हैं बनाए,
सतरंगी इंद्रधनुष सबके मन को भाए।।
सतरंगी रंगों से भरी ये कायनात,
हर रंग की अपनी खूबी, अपनी महिमा गाए।।
मयूर के पंखों को इतना सुंदर बनाया,
इसीलिए तो कान्हा को मोर पंख है भाया।।
रंग गुलाबी मोहब्बत का, कराता है आभास,
नीले रंग से सराबोर, सागर और आकाश।।
मातृभूमि की मिट्टी का, रंग भूरा है न्यारा,
सोंधी इसकी खुशबू, लगे यह सबसे प्यारा।।
सूर्य का रंग पीला, ऊर्जा और आशा जगाए,
अंधकार और शोक का, काला प्रतीक बन जाए।।
प्रकृति से हरा, शौर्य से केसरिया,
शांति को सफेद रंग संजोए ,
देशप्रेम और अभिमान से तिरंगा मेरा लहराए।।
इन रंगों से अलग, बहुतेरे हैं कई रंग,
बेरंग होकर भी जिंदगी में भरते जो उमंग।।
रंग जो भावनाओं को दर्शाते,
जीवन को बहुरंगी बनाते।।
रंग मां के दुलार, पिता के प्यार का,
भाई बहनों के स्नेह का,
दिखते नहीं पर जीवन में जरूरी बहुत ये रंग हैं,
इन रंगों के बिना तो जिंदगी सच में बेरंग है।।
दोस्तों की दोस्ती का रंग है अनमोल,
बच्चों की मुस्कान का रंग,
दे जीवन में खुशियां घोल।।
देश प्रेम का रंग, तन में जोश जगाए,
रिश्तों में लगाव का रंग, जीवन सुखद बनाए।।
बिना रंगों के जिंदगी हो जाए बेजान,
प्रेम, प्यार और स्नेह के रंग, सबसे अधिक महान।।
छोड़ ईर्ष्या द्वेष, धर्म जात,
रंग भावनाओं के समेट आगे बढ़ो,
होली के रंगों के साथ,
रंग खुशियों के, सबके जीवन में भरो।।

नीता शर्मा
शिलांग, मेघालय

ब्रज की होली

आयो फागुन रंग रंगीला,बरसे रंग गुलाल
बाल ग्वाल संग खेले होली मेरे मदन गोपाल।

आया फागुन तो आ गई होली रे
रंगों से भर गई सबकी झोली रे
मतवालों की निकली टोली रे
अरे रे रे.....भीग गई बालाओं की चोली रे।

ब्रज में गोपाल आवे, ढोल और मंजीरे बाजे
नाच नाच वह धूम मचावे,बीच डगर गुलाल उड़ावें
ग्वालों के संग खेले होली रे। आया फागुन....

रंगों की बौछार छाई, पिचकारी की फुहार आई,
अंगिया भीगी, चुनरी भीगी ,भीग गई है चोली
मस्ती में खेल रही ग्वाल बालों की टोली रे। आया...

गोपियों को खूब सतावे, बांह मरोड़े,मटकी फोड़ें
पिचकारी मारे, रंग बरसावे,बंसी की फिर तान सुनावें
सखियों के मुख पर मड दियो गुलाली रे।
आया फागुन तो आ गई होली रे।

सुनीता भट्ट गोजा

होली

फागुन आया, फागुन आया
देखो-देखो चारों ओर
नयेपन से सजी प्रकृति,
धरा लगे दुल्हन जैसी,
रंगों से भरा त्योहार लाया,
गुलाल, अबीर से रंगे चेहरे
क्या है कौन, कौन जाने
उसमें कालू-धोलू
रीना-मीना रंगे सब एक जैसे।
अपने चेहरे को रंगों के पीछे
छिपाकर चले ऐसे,
जैसे कोई अपनों में से।
मिलकर घुल-मिल जाएं,
ऐसे, जैसे कान्हा मिल जाए शिवा से
चल रहे हैं साथ सबके
लगे धरा पर उतर आया
आसमान, इंद्रधनुष को साथ लिए।

मल्लिका दे विष्णु

आओ खेले होली

गुलाल उड़ाए,
प्रीत की खुशबू फैलाये,
रंगों की बौछार लाये,
जीवन रंगों से भर जाए,
भूलें शिकवे मिटाये
मिलकर प्रेम के गीत गाये ,
हाथो में हाथ,
गालो पे गुलाल,
होंठों पे हंसी,
एहसास भाईचारे की लगे मीठी ।

बच्चे, बूढ़े, नर और नारी,
सब मिल खेलें होली
गूंजे हैं बोल हर गली,
रंग दो जीवन,आओ खेले होली ।

शबरी सरकार धर

हाइकु

बरसे रंग
आओ मनाए होली
मस्तो की टोली

रंग बिखरे
धरा दिखे रंगीन
होली है होली

ऐसा है पर्व
भूल जाते है ग़म
होली के दिन

होली में आज
यूँ रंग गई धरा
झूमे हम भी

पर्व है होली
महिना है फागुन
रंग बरसे

अनुपमा

दिल्ली इकाई

कविता है जनाब

कविता – कविता है जनाब, हिंदू न मुसलमां होती है
सुकून-ए-तारी इंसाँ की, राहत का पयाम होती है

रुह से निकली है हुजूर, रूह तक ही जायेगी
पंडित-काज़ी की इसे परवाह कहाँ होती है

हँस के मिलती है कभी, रुठो तो मनाती है
महबूब से बिछड़े तो छुप-छुप के रुलाती है

माँ के लिये बेटा है, बेटी के लिये बाप
भाई की राखी बन, जंग-ए-मैदाँ तक जाती है

हिंदू के लिये गीता, कुरान है मुस्लिम की
गुरु-ग्रंथ है सिखों की, बाइबिल ईसा की गाती है

फूलों की हम-सुखन बन काँटों में झूमती है
चाँद सी माशूक़ के ख्वाबों में सँवरती है

बुलबुल के गीतों में, कोयल सी कूकती है
भँवरों का ये गुनगुन बन शाखों को चूमती है

भूखे के लिये रोटी है, प्यासे को है पानी
दूध बन के माँ की छाती से उतरती है

अक्षर है - ब्रह्म है ये, अल्लाह-ए-क़रम है
नवरंग सी सप्तक के सुर-ताल में ढलती है

शिव सा ये गरल पी के समाधि में अचल है
कान्हा की बाँसुरी बन राधा को बुलाती है

मेरे वतन के लाड़लों, ये गीत है तेरे लिये
सर पे जिन्हें क़फन भी सेहरा सा सोहती है

डॉ. रश्मि झा

हमारा क्या है

बेवफा दुनिया में जी लूंगी हमारा क्या है।
ज़हर हंस हंस के भी पी लूंगी हमारा क्या है।।

तूने हर मोड़ पे हर बार साथ छोड़ा है।
ज़िन्दगी तन्हा ही ही जी लूंगी हमारा क्या है।।

सांस जब तक है बदन में न करुंगी शिकवा।
अपने होठों को भी सी लूंगी हमारा क्या है।।

सब्र का घूंट ही पी पी कर गुजारी है हयात।
और अश्कों को भी पी लूंगी हमारा क्या है।।

तंज़ के तीर से छलनी है जिगर मेरा अज़ीज़।
ज़ख्म दिल के भी मैं सी लूंगी हमारा क्या है।।

अफ़रोज़ अज़ीज़

देहरादून इकाई

होली रंगीली ब्रज के आंगन में

कन्हैया आ गयी होली रंगीली ब्रज के आंगन में
मगर तुम बिन ये होली कितनी सूनी ब्रज के आंगन में

तुम्हारी प्रीत में राधा तुम्हारी बावरी होकर
गंवा कर चैन सब अपना तुम्हारी प्रीत में खोकर
बहाये नीर नैनों से अकेली ब्रज के आंगन में
कन्हैया आ गयी होली रंगीली ब्रज के आंगन में
मगर तुम बिन ये होली कितनी सूनी ब्रज के आंगन में

कभी हम साथ खेले थे बिरज में रंग फाल्गुन के
कभी खिलकर बिखरते थे बिरज में रंग फाल्गुन के
हंसी अब रूठ कर गुमसुम है बैठी ब्रज के आंगन में
कन्हैया आ गयी होली रंगीली ब्रज के आंगन में
मगर तुम बिन ये होली कितनी सूनी ब्रज के आंगन में

यूं ही भूले से इस फाल्गुन चले आओ मेरे कान्हा
मुझे अपने ही रंग रंग दो सलोने ओ मेरे कान्हा
रंगोली हर तरफ़ बन कर सजेगी ब्रज के आंगन में
कन्हैया आ गयी होली रंगीली ब्रज के आंगन में
तुम्हारा रास्ता देखे दिवानी ब्रज के आंगन में

कन्हैया आ गयी होली रंगीली ब्रज के आंगन में
तुम्हारा रास्ता देखे दिवानी ब्रज के आंगन में

मोनिका मंतशा

नन्ही गौरैया

ओ नन्ही गौरैया
आज भी याद आती हो तुम,
फिर ले जाती हो,
बचपन में दोबारा मुझे।

जब माँ चादर बिछा,
उस पर गेहूँ धोकर,
सुखाने को डालती थी,
तब तुम आ जातीं थीं
जाने कहाँ-कहाँ से अकस्मात,
कभी झुण्ड में
तो कभी अकेले भी,
छत से उतरकर खपरैल पर,
फिर नीचे आँगन में
चुगने को दाना।

गाकर गीत मौसमी,
चीं-चीं की आवाज़ में,
कर देतीं थीं गुंजायमान,
फुदक फुदककर
सारा घर अंगना मेरा।

बनाती थीं कभी
निकटवर्ती वृक्ष की कोटर में,
तो कभी घर के किसी
छज्जे या रोशनदान में,
घोंसला अपना।

उफ्फ़, लील ही गये न,
ये आधुनिकता और शहरीकरण,
तुम्हें व तुम्हारे वृक्षरूपी,
निवासस्थानों को?
नहीं रखता कोई,
बरामदे या छतों पर
अपने घरों की अब,
तुम्हारे लिए दाना-पानी।

चिंतित हो जाती हूँ,
अक्सर ये सोचकर मैं,
क्या करूँ तुम्हारे लिए?
जो रोक सकूँ तुम्हारी प्रजाति को,
लुप्तप्राय होने से
कुछ अन्य जीवों की तरह?

'नीलोफ़र'

आकुल विनती

राह में चल रहा था,एक दिन जब मैं,
समुद्र के किनारे जा खड़ा हुआ मैं,
एक सीपी का मुँह था खुला मगर,
कोई मोती न जन्म ले सका वहाँ
शायद कोई बूँद ऐसी गिरी न हो वहाँ,
जो पाप रहित शुद्ध निर्मल धारा सी हो ।
मोती तभी बनता है बहना
जब शुद्ध पवित्र निर्मल धारा ही हो।
मिलन ऐसा बने जो टूटे से टूट न सके,
जन्मजन्मान्तर पुकारता रहे-पुकारता रहे,
ऐसा ही जीवन हो तेरा प्रिय
जो सदियों तक रहेगा पवित्र ही सदा,
याद कर कर के अँखियाँ रोयेंगी सदा,
तेरे सत्कर्मों को मन बसा लेगी सदा,
दिल भी पुकारता चलता रहेगा सदा,
मेरा मन कर्म से ही बँधा हो सदा,
ये भाव पालता रहूँ मैं सदा।
बने जो बनें, बिगड़े जो बिगड़े,
परवाह नहीं है मुझे अब किसी की भी नहीं,
बस, छाँह मिलती रहे सदा तुम्हारी,
यह आकुल विनती सुनते रहना सदा।
भगवन् सुनते रहना सदा,
आकुल मन शांत करते रहना सदा।।

पुष्प लता भटनागर

क्या करें?

हम कहाँ जा रहे हैं
क्या करें?
संस्कृति की बैंड बजी हुई है
क्या करें?
अभी तक तो सिनेमा ही थे
कुछ अच्छे कुछ वैसे थे
पर वैसे पर्ं का टैग था
सो बच्चों को देखने का
कोई अधिकार ना था
अब ओटीटी प्लेटफार्म आ गए हैं
सबको देखने की छूट दे रहे हैं
कैसे रोकें कोई अधिकार नहीं है
हम कहां जा रहे हैं ,क्या करे?
संस्कृति की बैंड बजी हुई है.....
कमाने के चक्कर में तो
अश्लीलता परोसी जा रही है
गालियाँ तो मिठाई की तरह
प्रेम से बांटी जा रही हैं
हम कहाँ जा रहे हैं क्या करे
जो बातें हम बच्चों से छिपाते थे
बड़े छोटे का अंतर ठहराते थेअब
जान हमे ओल्ड फैशन बताते हैं
अश्लीलता को मॉडर्निटी बताते हैं
हम कहां जा रहे है क्या करें?
अभी यहीं फुल स्टॉप नहीं है
आगे भी सुनिए और बुनिए
पहले कॉमेडी प्लेटफॉर्म
हेल्दी याने स्वस्थ होते थे
मनोरंजन के साथ थोड़ी
हंसी ठिठोली करते थे
पर आज मॉडर्न ज़माना है
स्टैंडअप कॉमेडियन आए हैं
मम्मी पापा सास ससुर की
बेइज्जती कर कॉमेडी का
बाजार जोरों से चलाए हैं
इतना ही नहीं गंदगी तो
ऐसे परोसते है कि
गंदगी ही शर्मा जाए
हमारा इतना बूता नहीं
कि लचर कॉमेडी बताएं
ये अपनी दुकानें ऐसे चला रहे
हम सभ्यता संस्कृति गवां रहे
नौजवान दिमाग ड्रिल हो रहे
हम देश का भविष्य खो रहे
हम कहां जा रहे हैं क्या करें..
बड़ेबड़े मुद्दे उठाती है सरकार
नौकरी बजट निर्माण बाजार
सभ्यता संस्कृति का हनन
क्या किसी मुद्दे से है कम
जागो इसे भी उठाना है
वर्ना संस्कृति को गंवाना है
ये साध्या के जज़्बात केवल
वाहवाही के लिए नहीं
ठोस कदम उठाना है
कलम को मशाल बनाना है
प्रश्न प्रश्न ही न रह जाए
उत्तर बनाना है
संस्कृति को बचाना है
अश्लीलता परोसने वालों
की बैंड बजाना है।

संगीता वर्मानी

अगर हम न होते

अगर हम न होते तो तुम भी न होते
न तो प्यार होता न ही गम भी होते

चाँद सितारों के हम संग न होते
अँधेरों को मिटाते चिलमन न होते

ये रौशनी को चीरते अँधेरे न होते
मर मिटने के खातिर परिंदे न होते

गुलशन में फूलों की कमी न होती
बगवान की अनदेखी के झमेले न होते

प्यार की कहानियों के चर्चे न होते
अगर हम न होते और तुम न होते

हम कैसे लिखते स्वरों से संजोते
हमारे संसार में 'उमेश' तुम न होते ।।

यामा शर्मा 'उमेश'

पटना इकाई

जिंदगी जीने की कला है

सच, जिंदगी जीने की बेशक कला है
सादगी और अनुशासन ही जीने की कला है
जीवन बड़ा अमूल्य है
इसका सही प्रबंधन
हमारे जीवन को सुखमय बना सकता है
जीवन में संसार का अनुपम सौंदर्य है भरा हुआ
इसका आनंद तभी ले सकते हैं जब
जीवन जीने की कला को अच्छी तरह समझ लें
अध्यात्म हमें जीवन जीने की कला सिखाता है
यह दिव्य विद्या प्राणी को हर दुःख,
कष्ट और चिंता से निजात दिलाकर
आनंद से सराबोर करता है
अतीत की चिंता को हटा दें
रिश्तों को अहमियत दें
दूसरों की भावनाओं का सम्मान करें
सकारात्मक सोच अपनाना चाहिए,
खुश रहने के लिए जरूरी है
कि हम वर्तमान में जीना सीखें
और हर पल को खुशियों के साथ बिताएं
जिंदगी में खुश रहना कोई जादू नहीं है
यह एक सतत प्रयास है
हमें अपने जीवन योग को भी
नियमित रूप से शामिल कर लेना चाहिए
इसे हम एक यात्रा भी कह सकते हैं
इसे हम अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ अपनाएंगे,
उतनी ही खुशी प्राप्त होगी
इसलिए हमेशा खुश रहना सीखें
अपने जीवन को संतुलित और स्वस्थ बनाएं

डॉ मीना कुमारी परिहार

मेरी मां

मेरी मां के आंचल की छांव निराली है
इसने ही तो मेरी हर ख्वाइश संभाली है
डांटती है जब जब बड़ी जोर से गुस्से में मुझे
फिर खुद उदास बैठती मां मेरी भोली भाली है

मेरी मां से रोशन घर मेरा, नित होली दिवाली है
दिखे ना घर में जब, दिन भी लगता रात काली है
साथ होने से इसके, हर खजाना मेरा,
हर सुगंध पे हक मेरा, मन मेरा उपवन का माली है

मेरी मां के हाथ में नसीब मेरा, शाबाशीयों की ताली है
मुझ पर आने वाली हर मुसीबत मेरी मां ने टाली है
मेरी उलझनों के शोर को खामोशी में समझती है,
इस नीम सी दुनिया में मां मीठे फलों की डाली है।

सोनिका शर्मा
कटरा, जम्मू कश्मीर

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल,
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धम्तरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332
Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

बिजनौर इकाई

यादें

कुछ संदूक भरे हैं मैंने,
कोरी - कोरी यादों के त
चिट्ठी पत्थर उसमें रखें,
निज से निज संवादों के त
कुछ है सपने उसमें अपनेज़,
तनिक है यादों के भी पल त
जिनको पढ़-पढ़ होते मैं,
कितनी ही बार भाव- विह्वल त
कोरी -कोरी है वो पुस्तक ,
कैद है हल्के -हल्के पलत
जाने कहां गुम हो गये,
होते थे जो अपने कल त
पन्नों में जो फूल रखे थे,
स्मृति बनकर उभरे हैंत
फूल की हर पंखुड़ी से,
भाव बनाकर उकरे हैं।

अर्चना चौहान
किरतपुर बिजअलीगढ

आप्रेशन सिंदूर

ऐ खून बहाने वालों,सिंदूर को राख बनाने वालो,
अब सिंदूर की ताकत देखो,सुहाग सिंदूर उजाड़ने वालो।।

क्या तुमने खेल ही समझा था,जिसको चाहे मारोगे,
नाम पूछकर धर्म का,तुम हिंदुस्तानियों को मारोगे।।

अब देखो सिंदूर क्या होता है,क्या होती है आप्रेशन सिंदूर की ताकत,
जो सिंदूर चेहरे का नूर था,वो आप्रेशन सिंदूर अब तुम्हें उजाड़ेगा।।

जितने सिंदूर मिटाये तुमने,हम बदले में असंख्य देगें,
एक एक सिंदूर के बदले,हम असंख्य जख्म तुमको देगें।।

तुमने क्या लावारिस समझा था,उतार दिया हमारे बेटों को मौत के घाट,
अब देखो कैसा होता है,धो धोकर मारना धोबी पाट।।

भूल जाओगे ऐ दरिंदो,फिर कभी ऐसा दुस्साहस करना,
अब अपने कलुषित हाथ,कभी भारत पर ना मारना।।

हमारी बेटियों का सुहाग छीन लोगे,बदले में तुम्हारी सांसे रोक देगें,
अपनी एक बेटी के सिंदूर के बदले,सिंदूर आप्रेशन से दम तुम्हारा घोंट देंगे।।

ये देश हमारा भारत है,भारतमाता वीरों की जननी है,
अनाचार सह सकती नही,दुष्टों के संहार में अग्रणी है।।'

डॉ आभा माहेश्वरी अलीगढ़

गीतिका

साफ दिखे जो,क्या गंगाजल हो सकता है?
अमृत रस भी ,कभी हलाहल हो सकता है?

बना किरकिरी, रहा खटकता आँखों में जो,
वही आँख का, कैसे काजल हो सकता है?

साथ निभाता, बार-बार धोखा खाकर भी,
इतना कैसे, कोई पागल हो सकता है?

जिसकी बातें ,चोट करें पत्थर के जैसी,
उसका दिल भी,कितना घायल हो सकता है?

लाख बुलाओ, बार-बार आवाजें देकर ,
बीता कल भी, क्या आगत कल हो सकता है?

ऋतुबाला रस्तोगी

स्वागत है ऋतुराज तुम्हारा

स्वागत है ऋतुराज तुम्हारा,स्वागत है ऋतुराज बसंत।
पलक पांवड़े बिछे हुए हैं,पुलकित हो गए दिशा दिगंत।

कली कली झूमे मुस्काए,कोयल वंदन गीत सुनाए।
झरे पराग धरा पर झर झर,रंग बासंती छटा दिखाएं।
गुनगुन भंवरे घूम रहे हैं,और फसल हुई रसवंत।
स्वागत है ऋतुराज बसंत।।

राह पथिक के नैनन भाई ,सरसों पीली जब लहराई।
काम के बाण चले संघाती,आम्र मंजरी भी बौराई ।
बिरहन का जो जिया जले तो,पूछे कहां छुपे मोरे कंत।
स्वागत है ऋतुराज बसंत ।।

कोमल पल्लव नयन खोलकर कलियों संग बतियाते हैं।
चंद्रकिरण संग देवदूतअब प्रेम सुधा बरसाते हैं।
क्यारी क्यारी केसरिया ध्वज,मदन बिखरे रूप अनंत ।
स्वागत है ऋतुराज बसंत।

डॉक्टर पूनम चौहान
धामपुर बिजनौर उत्तर प्रवेश

बनारस इकाई

जीवन् कैसे बदल गया

जीवन कैसे बदल गया, ममता दूरियों में ढ़ल गया ,
क्या से लो क्या हो गया ,बासंती काया गल गया ।
जीवन कैसे बदल गया...
देखे बिना उन बच्चों को,जिया जो नहीं लगता था,
सीने से लगाए बिना, हिया भी नहीं खिलता था ।
आज कितने लाचार हैं, बेबस और बीमार है,
नन्ही कलियां बाग के वो ,लो फूलों में बदल गया ।
जीवन कैसे बदल गया...
कब दिन प्यारा आती थी, कब रात गुजर जाता था,
उनके लिए पल-पल जो था,हर पल जी घबराता था,
जीवन जीने के संघर्ष में, लाड़-दुलार भी जल गया।
जीवन कैसे बदल गया...
माँ का आँचल सूना है, तिल-तिलकर जिसे बुना है ,
ममता तड़पकर रह गई, आँचल तार-तार गल गया।
जीवन कैसे बदल गया ...

सुनीता जौहरी
वाराणसी उत्तर प्रवेश

नोयडा इकाई

होरी

धूम मची बृज ओरी
कि नन्दलाला खेलो न होरी।

अबीर गुलाल उड़त गलियन में।
रंग खेलत श्यामा राधे संग में।
भीजि गई बृज छोरी
कि नन्दलाला .....

पकरि लेउ जाय रंग में बोरौ।
डुबकी लगाऔ खूब झंझोरौ।
धूरि लगाऔ गउअन खोरी।
कि नन्दलाला.....

नन्द बाबा घर धूम मची है।
कान्हा के घर माया रची है
प्रेम पगी रंग डोरी
कि नन्द लाला.....

धन्य सखी नन्द गाँव हमारो।
जन्मों जहाँ नन्दलाल हमारो।
जन्मी राधा किशोरी
कि नन्दलाला.....

प्रवीणा त्रिवेदी प्रज्ञा

जज़्बात

अंतर्मन की गहराइयों में दबे अहसास
संघर्ष-तपन से छिटक गए सारे उल्लास।

एकांत में ही सुंदर ख्वाबों का मंजर उठता है,
सोए हुए सब अरमानों को वह जगा देता है।

जिन ख्वाबों के बीज दिल में कभी मैंने बोए,
कैसे वही एहसास समय-चक्र-से खो-से गए।

एक समय था कल्पना-लोक मे ही विचरते थे,
प्यारे-से एहसासों से हर रोज़ गुफ्तगू करते थे।

दामन में मेरे जो कभी खुशी का ही बसेरा था,
चिड़ियों की चहचहाहट से भरा ही सवेरा था।

कभी इन्हीं सुंदर एहसासों से दिल आबाद था,
नयन-बरखा से अब महल हो गया बरबाद था।

चुन- चुनकर हमने मोती समान संभाला था,
जज्बातों को सुंदर-माला के रूप में ढाला था।

एहसासों की इसी इमारत पर जीवन खड़ा है,
अरमानों की बंजर-जमीं से अभी भी जुड़ा है।

सुख-दुख दोनों ही एहसास संग हमारे रहते,
कभी लफ़्ज़ों पे तो कभी कागज पे वे उतरते।

मेरे एहसास रोज़ ही कहानी नई बयां करते हैं,
कभी दर्द तो कभी हँसी की सब बातें कहते हैं।

अर्चना कोहली 'अर्चि'
नोएडा (उत्तर प्रदेश)

साथ मेरे काफ़िला होने लगा

1.रफ़्ता-रफ़्ता वो मेरा होने लगा
अजनबी जान- ए -वफ़ा होने लगा

2.नूर चेहरे पर नया सा अब मेरे
दिल का मौसम खुशनुमा होने लगा

3. मिलते ही नज़रें ज़रा उसकी झुकीं
दिल मेरा कुछ मनचला होने लगा

4. सब्र से सींचा गया जो प्यार से
बाग़ वो दिल का हरा होने लगा

5. सामने दुश्वारियाँ आने लगीं
इश्क़ फिर उनका फ़ना होने लगा

6. बात दिल की लब पे जब से आ गई
दरमियाँ फिर फ़ासला होने लगा

7.चार पैसों की ख़बर जब से हुई
हर कोई मेरा सगा होने लगा

8. ग़ैर की ख़ातिर दुआ जब से करी
आप ही मेरा भला होने लगा

9.बात सबके फ़ायदे की जो कही
साथ मेरे काफ़िला होने लगा

डॉ शिवानी चंद्रा

तुझसे रूठी हूँ

तुझसे रूठी हूँ तुझे आके मनाना तो होगा
करते हो कितनी मोहब्बत ये बताना तो होगा

मोहब्बत की ये राहें कहाँ होती है आसां
पर इनको भी तुम्हें आखिर निभाना तो होगा

मैं जानती हूँ तुम मुझे मना तो लोगे ही
मुझसे झूठी नाराज़गी दिखा सताना तो होगा

तुम करोगे इक़रार मैं जानती हूँ इक़ दिन
पर कुछ गुलाब देकर मुझे रिझाना तो होगा

पलकों तले पनप रहे हैं कई हसीन सपने
इन ख़्वाबों से मुझे आके जगाना तो होगा

अवंतिका

कानपुर इकाई

पिता

रहते थे खुशहाल पिता,
खाते रोटी दाल पिता।
नमक अगर ज्यादा हो जाये ,
लेते पानी डाल पिता।
गाय भैंस उनको थी प्यारी ,
रखते खूब खयाल पिता !
सब को दूध पिलाते थे,
आंगन मेंबैठाल पिता।
अम्मा जी तैयारी करती ,
होते खूब निहाल पिता !
बजरंगी के भक्त बड़े,
गाते रघुवर लाल पिता।

भूत प्रेत जिसको भी आते,
देते उनको झार पिता।
बिच्छू जहर जिसे चढ़ जाता,
देते तुरत उतार पिता।
भर भर जेब पेहेटुआ लाते।
लाते कैथा आम पिता।
ढूढ ढूढ करके बनवाते।
बन करइल हर शाम पिता।

बाबा जी की दवा मिठाई,
लाते खूब सम्भाल पिता।
चाचा और बुआ संग बुनते,
सम्बन्धों का जाल पिता ।
ट्रेक्टर में बैठा करके,
ले जाते बाज़ार पिता।
गंगा जी बाल्हेस्वर बाबा,
ले जाते हर बार पिता।
कई बार विपदाएं आईं,
पर माने ना हार पिता।
हम बच्चों के करते थे,
हर सपना साकार पिता।
हम सबकी खुशहालीको,
त्याग किये हर बार पिता।
अब तो केवल यादें बाकी,
उनसे मिले न पार पिता।

डॉ0 सुषमा सेंगर

दूरियां

पास इतने हुवे दूरियां रह गईं।
याद उनको मेरी गलतियां रह गईं।।

भर के दामन में खुशियां मै ले कर चली,
फिर भी होंठो पे ये सिसकियां रह गईं।।

है हमारा वहम याद करते हैं वो,
अब तो शामों सहर हिचकियां रह गईं।।

जाल लोगों ने फेंका अजब भूंख थी,
जल जो सूखा तो बस मछलीयां रह गईं।।

मजहबी ये मशालें थी फिर जल उठी,
आशियां जल गए खिड़कियां रह गईं।।

आज अंगार बरसे हैं इस बाग में,
सारे झुलसे सज़र तितलियां रह गईं।।

प्रेम मिसरी तो हम बांटते ही रहे,
फिर न जाने ये क्यों तल्खियां रह गईं।।

फूल जैसी थी नाजों से सींची गई,
फिर भी तन्हा हि क्यों लड़कियां रह गईं।।

फिर चली आंधियां भी सितम से भरी,
सब परिंदे उड़े बस्तियां रह गईं।।

खेल सबने ही खेले हैं सारी उमर,
मिल गए खाक में पारियां रह गईं।।

छत पे आती थी चिड़िया जो तेरे कभी,
मर गई प्यास से मटकियां रह गईं।।

शिप्रा ज्ञानेंद्र सिंह

गीत

बंसिया बजावें स्याम संझवा सबेरवां हो
चलो चली जमुना के तीर हो गुजरिया
चलो चली जमुना के तीर
भोर भये पौ फाटत कन्हैया
हाथ जोरि कहै सुनि मेरी मैया
मैं बन जैहौं,गउएं चरइहौं
नन्द बबा की करूँ कौल मोरी मैया
चलो चली- - - -
बारौ जानि मति डरपै री मैया
दाऊ के संग-संग रहिहौं री मैया
लकुटी लिए संग डोलत रैहौं
संग सखा अति वीर री मैया
चलो चली जमुना- - -
माथौ चूमि दें असीस माई यशुदा
पायँ पिरायँ जो दौरेहु ज्यादा
ग्वाल सखा सब करिहैं ठिठोली
गैया, बछरुआ
बंसिया बजावें स्याम संझवा सबेरवां हो
चलो चली जमुना के तीर हो गुजरिया
चलो चली- -

डॉ सुषमा त्रिपाठी

उनका ये जीवन!

उनके झुर्रीदार चेहरे पर
मुस्कान कभी जब दिखती है,
वो पल गया बन
जिंदगी के अनमोल पल।
उन आँखों की चमक में
छलक रही थी ममता,
वो आलिंगन काँपते हाथों का
अहसास है सार्वभौम,
जो जीवन भर खोजते रहे
कहीं और नहीं ।
ये बुजुर्ग चाहते हैं
कुछ पल जो हम सिर्फ
उन्हें देखें, उन्हें भाले,
सुनें उनकी प्यारी यादों का राग।
वे फिर कुछ पल जी लें,
उन लोगों की यादों के साथ,
जो चले गये लेकिन
उनमें जुड़ा हमारा बचपन था।
कौन साथ देता है?
हमारे पास समय नहीं,
हमारे बच्चों को कोई दिलचस्पी नहीं!
तब ही तो वृद्धाश्रम के मित्र,
बहुत अपने होते हैं।
सहोदर नहीं होते हैं,
फिर भी
साथ हँसते हैं,
साथ खेलते हैं,
साथ आंख भर लेते हैं,
काँधे पर हाथ धरें तो,
धूप भी देती है,
एकाकी जीवन की शीत में।
सिर्फ आंख के इशारे से
बांट लेते पीड़ा
और
शायद यही जीवन है अब।
यही जीवन है अब।

रेखा श्रीवास्तव

अपने आँचल में

अपने आँचल में
हौसले का उजास बाधे,

टेरेस पर कटरा -दर-कटरा
जिंदगी सँजोती,

मुस्कुराती हुई खड़ी एक स्त्री।
उसके पास उम्मीदों
का केनवास था

हिम्मत और सूझबूझ
के ब्रश-स्ट्रोक्स थे

वह तिनका तिनका
कर आसमान बुन रही थी

कल की स्त्री
प्रेम के नातो से जुडी थी

और सकारात्मक सोच
के सहारे एक सुंदर घर,

बेहद पवित्र दुनियाँ
बनाने को तैयार थी।

डॉ हेमा पांडे

मेरा घर

कहने को तो घर है मेरा,
पर मै यहाँ पराई हूं।
कैसे इस घर को छोडूंगी,
ये सोच के आंख भर आई है।
मायका कहते हैं जिसको,
वो इक दिन पराया हो जाएगा।
ससुराल वालों में ही मेरा,
अस्तित्व सिमट कर रह जायेगा।
छूट जायेंगे संगी साथी,
मां बाप और भाई।
सदियों से ना जानें क्यूं?
ये रीत चली है आई।
कहने को दो घर हैं मेरा,
फिर क्यूं कोई नही है मेरा ।
कोई कहता वो घर है तेरा,
कोई कहता वो घर तेरा।
मायके और ससुराल में,
सिमट कर रह गया मन मेरा।

श्रद्धा श्रीवास्तव

नवरात्रे

आ गए नवरात्रे ओए क्या बात हो गई
माँ ने आँचल लहराया, जीवन में रौशनी हो गई
मिल गए दर्शन माँ के, ओए क्या बात हो गई
माँ का आशीष पाया, झोलियां भर गई
आ गए.....

माँ मेहरावाली है, माँ ज्योता वाली ,
माँ के दर्शन है पाना ,

तेरे मिलने से माँ बेड़ा पार हुआ
माँ के मंदिर सजे हैं ओए क्या बात हो गई
माँ का घंटा बजाया, सुरमय लय हो गई
मिल गए दर्शन माँ के ओए क्या बात हो गई
माँ का घंटा.....
आ गए.....

माँ पहाड़ा वाली है, माँ ज्योता वालीं ,
माँ की ज्योत जगाना ,
सारे जगत का उद्धार हुआ
माँ के दरबार सजे हैं ,ओए क्या बात हो गई
माँ का भक्तों से मिलना, मुलाकात हो गई
मिल गए दर्शन माँ के, ओए क्या बात हो गई
माँ का भक्तों से मिलना.....
आ गए.....

माँ त्रिकूटा वासी हैं, माँ हिमालय की रानी ,
पौड़ी पौड़ी चढ़ते है जाना,
तेरी भक्ति में डूबा संसार पूरा
सारा जीवन सुखमय संसार हो गया
मैंने चूनर उड़ाई दीदार हो गया
मिल गए दर्शन माँ के ,ओए क्या बात हो गई
मैंने चूनर उड़ाई.....
आ गए .....

डा.योगिता सिंह 'हंसा'

दहेज का दावानल

यह धरा लाश की ढेर बनी,
है लाशों का अंबार।
है आग लगी अब जोरों से,
उत्पाती है अंगार ।।
जलता जग का है भव्य रूप,
जलता जग का श्रृंगार।
जलता दहेज का दावानल,
जलता सारा संसार।।

जो लेते हैं बहुओं की जान,
वे पक्के दानव हैं शैतान।
चोर-उचक्के और बेईमान,
पाजी पापी वे इन्सान ।।
जो हरे प्रिया का प्रान,
निरा पशु है, वो मृतक समान।
उन्हें मत माफ करो भगवान,
नर्क दो रौरव उन्हें अजान ।।
थूक दो उन पर दो दुत्कार,
लगाओ निशदिन लात हजार।
जलता दहेज का दावानल,
जलता सारा संसार।।

शादी हो गई है सौदा अब,
सौदागर की सौदाई।
जिस दुनिया में दुल्हन रहती,
वह दुनिया है दुखदायी ।
वह मधुर मिलन कैसा होता,
हो पाती नहीं मिलाई।
मिलने से भी गहरी होती,
अचरज है, कैसी खाई।
मनुजों ने छोड़ी मानवता,
मन रोता जार-बेजार ।
जलता दहेज का दावानल,
जलता सारा संसार ।।
जागो समाज के रखवारो,
जागो युगवीर महान।
दानव दहेज का दारुण है,
हो चुका बहुत बलवान ।।
संहार करो इस दानव का,
हो जाओ सावधान।
कुछ कर्म करो ऐसा सुन्दर,
स्वर्गिक हो पुनः जहान ।।
हो जाए विषम ज्वर विगत तुरत,
जागे जग में ज्वार।
जलता दहेज का दावानल,
जलता सारा संसार ।।

कितनी अबलाएं होम हुई,
बलि वेदी है हुंकार रही।
ज्वाला में जलती बाला की,
नभ भेदी ध्वनि फुफकार रही।।
धारा सुधर्म की बह निकली,
वसुधा को है ललकार रही।
चेतना स्वयं जागृत होकर,
नवयुग को टेर पुकार रही।।
विद्रूप बनाते सपनों को,
तुमको है धिक्कार।
जलता दहेज का दावानल,
जलता सारा संसार ।।

ऊँचे-ऊँचे महलों वालो,
आदर्श रूप बनने वालो ।
उजले नव नवल वसन वालो,
अभिनय में दम भरने वालो ।।
गोरे तन, मलिन कुमन वालो,
वैभव पर हे मरने वालो।
अब जागो, 'प्रखर', वतन वालों,
खैरातों पर पलने वालो ।।
अनवरत कालिमा से भरता,
तेरा काला व्यापार।
जलता दहेज का दावानल,
जलता सारा संसार ।।

पूनम पांडे

जीवन यात्रा

इन राहों पर चलते-चलते,
कभी समय ऐसा आया।
मिली भोर सुख की मनभावन,
शाम दुःख का था साया।।

मन हर्षित आनन्दित रहता,
दुःख दर्द सारे भूले।
गिरी तड़ित जब संघर्षों की,
प्राण अधर में तब झूले।।
सघन निराशा ने उर घेरा,
अवसादी मन घबराया।
इन राहों पर चलते-चलते,
कभी समय ऐसा आया।।

खेल प्रतिस्पर्धा का चलता,
हार जीत का भय खाता।
चिंता में मानव मन रहता,
जीवन पूरा कट जाता।
कभी जरा सी मिली सफलता,
उल्लासित उर हर्षाया।
इन राहों पर चलते-चलते,
कभी समय ऐसा आया।।

प्रणय भाव जब संचारित हो,
बना पखेरू मन उड़ता।
मिलन हृदय का अनुपम होता,
जन्मों का नाता जुड़ता।।
संग प्रीत के रीत विरह की,
प्रभु क्या संयोग बनाया।
इन राहों पर चलते-चलते,
कभी समय ऐसा आया।।

जीवन सब दायित्व निभाते,
फिसल रेत सा जाता है।
अंतकाल में जीने का यह,
मर्म समझ में आता है।।
शक्ति हीन तन मन के कारण,
अक्सर रह रह पछताया।
इन राहों पर चलते-चलते,
कभी समय ऐसा आया।।

सीमा वर्णिका

प्रयागराज इकाई

भीड़ से कुछ अलग रहकर

भीड़ से कुछ अलग रहकर,
जगत को मैं सुन रही थी।
वेदना उर की थी बढ़ती,
धरा सम सब सह रही थी।।

प्रेम के पथ पर जुड़ी जब,
हृदय की पीड़ा हुई कम।
किया खुद पर ही भरोसा,
आसमाँ को लख रही थी।।

इक परिंदा कुछ था घायल,
जब दिखा अपनी ही छत पर।
उसकी पीड़ा देख लहू सम,
भूल अपना गम रही थी ।।

दर्द पर मरहम लगाने ,
ज्यों बढ़ी उसकी तरफ मैं।
चीख सुन घबराई थी पर,
पंख सहला मैं रही थी ।।

देख कातर नज़र उसकी,
कब ये दिल उसमें समाया।
जख्म ज्यों- ज्यों भर रहा ,
बिछुड़ेगा ये घबरा रही थी ।।

उस खुली छत पर उसे जब,
दौड़कर पकडू कभी मैं ।
चहचहाते देख उसको ,
कुछ तो मन्नत कर रही थी ।।

आज जब वह पास मेरे,
फिर क्यों तरसे है मेरा मन।
याद करती हूँ वह दिन ,
जब मैं उसी में रम रही थी।।

श्वेत पन्नों पर उन्हीं पल को,
पिरोया मुक्त छन्द में ।
हृदय के उल्लसित भाव ,
जिसे ये मनसा रच रही थी।।

डॉ.(कु.)शशि जायसवाल

मेरा देश

मेरे प्यारे - प्यारे देश ,
भारत में रहते लोग अनेक ,
ओ मेरे देश रे, ओ मेरे देश रे

ये है कृषि प्रधान देश ,
इसके नायक कृषक अनेक ,
ओ मेरे देश रे , ओ मेरे देश रे

इसमें है पर्व -त्यौहार अनेक ,
जिसके तौर-तरीके अनेक
ओ मेरे देश रे ,ओ मेरे देश रे

इसमें हैं रस्म-रिवाज अनेक
जिसमें हैं वेषभूषा अनेक ,
ओ मेरे देश रे , ओ मेरे देश रे

इसमें है भाषाएं अनेक ,
आपस में झलके केवल प्रेम
ओ मेरे देश रे , ओ मेरे देश रे
इसमें हैं धर्म-पंथ अनेक ,
जिसमें प्रबल है देशभक्ति एक
ओ मेरे देश रे , ओ मेरे देश रे

इसमें है भू-क्षेत्र नदियाँ-पर्वत अनेक ,
किन्तु सबकी जन्मभूमि एक
ओ मेरे देश रे , ओ मेरे देश रे
अनेकता में एकता का देता संदेश ,
जिसमें बसती है सबकी श्वासें जानें,
ओ मेरे देश रे , ओ मेरे देश रे

साधना खरे

मां संपूर्ण संसार है

मां ने मुझको जन्म दिया
पाल पोस कर बड़ा किया
मां से ही है सारी खुशियां
मां के बिना जीवन अधूरा

मां संपूर्ण संसार है

माँ करती बहुत प्यार
कभी करती स्नेह की बौछार
आगे बढ़ने की राह दिखाती
कठिन समय में सहारा देती

मां संपूर्ण संसार है

मां मेरी है अनमोल
मां का नहीं है तोल
मां जीवन का आधार
मां की हर दुआ कबूल

मां मेरी संपूर्ण संसार है

मां ममता की छांव
मां मेरी भगवान
मां संस्कारों की संस्कृति
मां मेरी हमजोली

मां मेरी संपूर्ण संसार है।।

डॉ पूर्णिमा पाण्डेय 'पूर्णा'

गीत

खुशबू है जहां फैली चंदन है मेरा भारत,
महका ये चमन सारा, गुलशन है मेरा भारत।

हर धर्म व मजहब के रहते हैं सदा मिलकर,
है रूह में बसता सदा, धड़कन है मेरा भारत।

वीरों से सजा भारत जन्मे है धरा पर जो,
चंपा चमेली महके, उपवन है मेरा भारत।

सौहार्द प्रेम के सदा, धागों में बंध के रहते,
गौरव है राष्ट्र का सदा, वंदन है मेरा भारत।

हर मेल व मजहब के, रहते हैं यहां वासी,
गंगा व जमुना सरस्वती, संगम है मेरा भारत।

मिलकर दिवाली होली, त्यौहार मनाये सब,
रिमझिम बरसता सावन, आंगन है मेरा भारत।

श्रद्धा सुमन है अर्पण, मिटते हैं घरा पर जो,
है विश्व गुरु भारत शहीदों का, दामन है मेरा भारत।

मंजू लता नागेश

फागुनी बयार मे धूप

फागुनी बयार मे धूप
पसार रहा था अपना पाँव
और /
सिमट रही थी दोपहर
घर की चहारदिवारी मे

तेज धूप से खौफ खाकर
दुबुक रहे थे लोग
कमरो मे ,
नही दिखता अब कोई छतो पर धूप लेते
सिवाय दो - चार कपड़ो के ;
धूप मे सुखाये जा रहे थे
लिहाफ और गर्म कपड़े
अलविदा हो रही है सर्द
और /
सिमट रही थी उसकी परछाइयाँ
पसार रहा था धूप अपना पाँव
बस
कुछ यूँ ही थी
फागुनी बयार मे धूप

शाम्भवी

बूँद भी छलकती है

अनजान रहना फायदेमन्द होता है कभी-कभी
जान लेने पर जान निकल जाती है।
लाख समझौते हों परिस्थितियों से अच्छे बुरे
पल भर में पहचान बदल जाती है।
अकेलापन जगह बनाता है खालीपन के लिए खुशी-खुशी
उदासी यों ही खामोश सी मचल जाती है।
रूठना-मनाना चलता है गुमसुम अपने की तलाश में
प्यार की चुप्पी झगड़ लेने में फिसल जाती है।
तूफान से पहले पसरा सन्नाटा डरा देता है भरसक
सामना कर लेने से तबाही सम्भल जाती है।
मन का होने पर भी सुकून नहीं मिलता कई बार
भूल कर भूलने में बेचैनी पिघल जाती है।
आत्म सम्मान के लिए आत्महनन विकल्प नहीं होता
अन्याय के जोखिम से आत्मा दहल जाती है।
फायदे के लिए अच्छा बनना नुकसान दायक है
चाल बाजियों की मंजिल लालच के महल जाती है।
बड़ेपन में बचपन की चीजें बचपन से मिला देती हैं
बड़ी से बड़ी परेशानी आसानी से बहल जाती है।
भलाई अगर चुप रहने है तो कह देने में भी होती है
सही गलत की रेस में दूर तक टहल जाती है।
रिश्ता हो या किताब, पढ़ने के लिए उचित दूरी चाहिए तय
फासला ने हो तो पढ़ाई में खलल जाती है।
बिना संघर्ष मिली सफलता की कद्र नहीं होती
अकर्मण्यता के चलते कामयाबी मसल जाती है।
अपनी नज़रों से गिरकर उठना सरल नहीं होता
उठने की कोशिश में पतझड़ की फसल जाती है।
प्यार का कोई मोल नहीं पर ग्राहक बहुत मिलते हैं
बाज़ार की हलचल में रुपयों की दखल जाती है।

डॉ कल्पना वर्मा

गज़ल

इससे बढ़कर हमें और क्या चाहिए,
बस बुजुर्गों की हमको दुआ चाहिए।

कुछ मिले न मिले मिल सके इतना बस,
ग़म के जाने का अब रास्ता चाहिए।

मौत से रोज़ लड़ते हुए थक गयी,
ज़िंदगीं अब तिरा आसरा चाहिए ।

हर तरफ बेबसी बेकसी दिख रही,
आज मौसम हमें बस हरा चाहिए।

माँगने पर कभी जो मिली ही नहीं,
उस खुशी का हमें रब पता चाहिए।

नफरतों का अँधेरा बढ़ा दिख रहा,
अब मुहब्बत का दीपक जला चाहिए।

बढ़ रहे मज़हबी झगड़े 'रचना' ये क्यूँ,
ऐ खुदा इसका अब फ़ैसला चाहिए।

रचना सक्सेना

व्यथित हृदय

वो बीते दिन कहां छुप गए हैं
स्मृतियों में पलते थे हर दम ।

न निश्छल सा मन है,न पावन तन है
न जाने कहां छुपा रावन है ।

पवन के झोंके आते हैं प्रतिपल,
मलय समीर ने जानें कहां है ।

चंदा भी फेरी देता तारों संग,
चांदनी न जाने कहां है ।

सूनी सी सड़कें थमा आसमां है,
वो धड़कन दिलों की न जाने कहां है ।

मन में दहक है,तन में अगन है,
ठहरा सा जीवन बहकने लगा है।

वो बीते दिन कहां छुप गए हैं,
स्मृतियों में पलते थे हर दम ।

कविता उपाध्याय क्षिप्रा

जिंदगी बड़ी कठिन

जिंदगी बड़ी कठिन पहेली है
कभी फीकी है कभी रंगीली है
जिंदगी।।।।
सुख में आंखें चमकती खुशियों से
दुख में आंसुओं से आंखें गीली है
जिंदगी।।।।।
बचपन बीत जाता है चुटकियों में
राह जवानी की बड़ी कटीली है
जिंदगी।।।।
पाला था जिनका बड़े नाजों से
नजरे आज उन्होंने भी फेर ली है
ज़िंदगी।।।।।
नेह से बंधे थे जो रिश्ते नाते
प्यार की डोर उनकी ढीली है
जिंदगी।।।
जया रहती है ना उदास हो तू
सुख दुख एक दूसरे की सहेली है
जिंदगी।।।।

जया मोहन प्रयागराज

साहित्य अनुरागी थी साधना श्रीवास्तव

अतीत के झरोखे से

क्यूँ मन प्रदीप्त के भीतर?
वह भोली - भाली सूरत।
बनती है और बिगड़ती,
वह भोली - भाली कीरत।
आँसू आँखों से छलके,
कुछ याद सखी की आयी।
कुछ विस्मृति सी मुस्काई,
कुछ पल हर्षित से उलझे।
मैं समझ नहीं पाता हूँ,
जो साथ बिताये दिन थे।
जिन रातों में दिन उलझा,
सोचा करता हूँ पल - पल।
(-स्मृति) कविता संग्रह से

उपरोक्त उद्धार साहित्यकार संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी के हैं, जिसे उनकी पत्नी श्रीमती साधना श्रीवास्तव जी की स्मृति में सृजित "स्मृति" कविता संग्रह से उद्धृत किया गया है। श्रीमती साधना श्रीवास्तव सादगी पसंद सरल स्वभाव की गृहिणी थीं।श्रद्धेय श्री श्याम मोहन श्रीवास्तव जी की छः संतानों में सबसे बड़ी संतान थीं । श्रीमती साधना श्रीवास्तव चार बहनें व दो भाई थे । उनका विवाह 7 जनवरी 1987 को श्री उमेश श्रीवास्तव जी के साथ हुआ था। श्रीमती साधना श्रीवास्तव के दो बेटे हैं जो पढ़ाई लिखाई करके अपने अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं। श्रीमती साधना श्रीवास्तव जी का साहित्य के प्रति अत्यधिक अनुराग था।